नव भारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

पर्यावरण संकट की जड़ बनती उपभोक्तावादी प्रवृत्ति

शुक्रवार को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया. यह केवल प्रतीकात्मक पौधारोपण करने का नहीं, बल्कि आत्ममंथन का दिन है. यह सोचने का अवसर है कि आखिर पृथ्वी पर बढ़ते पर्यावरणीय संकटों के पीछे वास्तविक कारण क्या हैं. जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, जैव विविधता का क्षरण, जल संकट और प्रदूषण जैसी समस्याओं की जड़ में केवल तकनीकी या आर्थिक कारण नहीं हैं, बल्कि मनुष्य की अनियंत्रित इच्छाएं और असीमित उपभोग की प्रवृत्ति भी है.

मानव सभ्यता ने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है. संचार, परिवहन, चिकित्सा और सूचना प्रौद्योगिकी ने जीवन को पहले की तुलना में कहीं अधिक सुविधाजनक बनाया है. इन उपलब्धियों पर गर्व करना स्वाभाविक है, किंतु समस्या तब उत्पन्न होती है जब विकास का अर्थ केवल अधिक उपभोग और अधिक संसाधनों के दोहन तक सीमित होकर रह जाता है. मौजूदा दौर में व्यक्ति के सामने जो उपलब्ध है, उससे संतोष नहीं है और जो नहीं है, उसे प्राप्त करने की बेचैनी लगातार बढ़ती जा रही है. यही तृष्णा पर्यावरणीय संकट की सबसे बड़ी वजह बनती जा रही है. भारतीय चिंतन ने सदियों पहले इस समस्या की ओर संकेत किया था. संस्कृत के महान कवि भर्तृहरि ने कहा था कि समय नहीं बीतता, बल्कि हम बीत जाते हैं; तृष्णा नहीं बूढ़ी होती, हम बूढ़े हो जाते हैं. यह कथन आज पहले से अधिक प्रासंगिक दिखाई देता है. दरअसल, आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति ने इच्छाओं को आवश्यकता का रूप दे दिया है. परिणामस्वरूप व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी अधिकाधिक संसाधनों पर अधिकार जमाने की दौड़ में शामिल हो गए हैं. पृथ्वी के सीमित संसाधनों पर बढ़ता दबाव इसी मानसिकता का परिणाम है.

जलवायु परिवर्तन का संकट इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है. विकास के नाम पर जंगलों की कटाई, जीवाश्म ईंधनों का अत्यधिक उपयोग और प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन पृथ्वी की सहनशीलता को चुनौती दे रहे हैं. विकसित देशों से लेकर विकासशील राष्ट्रों तक, सभी आर्थिक प्रगति की प्रतिस्पर्धा में पर्यावरणीय संतुलन को पीछे छोड़ते दिखाई देते हैं. इसका दुष्परिणाम पूरी मानवता को भुगतना पड़ रहा है. ऐसे समय में टिकाऊ विकास या सस्टेनेबल डेवलपमेंट की अवधारणा महत्वपूर्ण बन जाती है. किंतु केवल नीतियों और योजनाओं से समस्या का समाधान संभव नहीं है. इसके लिए जीवन-दृष्टि में परिवर्तन आवश्यक है. भारतीय ज्ञान परंपराएं संयम, अपरिग्रह, त्याग और संतुलित उपभोग का संदेश देती हैं. हिंदू, जैन और बौद्ध विचारधाराएं मनुष्य को केवल अपने हित तक सीमित न रहकर समस्त सृष्टि के कल्याण की चिंता करने की प्रेरणा देती हैं. जाहिर है कि पर्यावरण संरक्षण का वास्तविक मार्ग प्रकृति से अधिक लेने में नहीं, बल्कि अपनी आवश्यकताओं को समझने और इच्छाओं पर नियंत्रण रखने में है. पृथ्वी की रक्षा तभी संभव है जब विकास और उपभोग के बीच संतुलन स्थापित किया जाए. विश्व पर्यावरण दिवस पर यही संकल्प सबसे अधिक प्रासंगिक है कि हम प्रकृति को संसाधन मात्र नहीं, बल्कि जीवन के आधार के रूप में देखें. यदि तृष्णा पर संयम नहीं लगाया गया, तो विकास की यह दौड़ अंततः मानव सभ्यता को ही संकट में डाल देगी. पृथ्वी को बचाने के लिए हमें अपने भीतर झांकना होगा, क्योंकि पर्यावरण का भविष्य हमारे आचरण और जीवन-शैली से ही तय होगा.

नए भारत के दिल की धड़कनों में बसते हैं बिरसा

रंजना चोपड़ा

भारत जब अपने स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानियों को याद करता है तब छोटानागपुर के जंगलों से एक नाम अपनी दृढ़ नैतिक ताकत के साथ उभरता है. यह नाम भगवान बिरसा मुंडा का है जिन्हें 'धरती आबा' यानी भूमि के रक्षक के रूप में पूजा जाता है. वह एक ऐतिहासिक हस्ती से आगे बढ़ कर गरिमा, प्रतिरोध और जनजातीय आत्मसम्मान के जीवंत प्रतीक भी हैं. उनकी सोच थी कि जनजातीय पहचान की रक्षा की जाए, समानता सार्थक हो और विकास आम जन तक न्याय के साथ पहुंचे. उनका यह सिद्धांत अब भी विकसित भारत की ओर देश की यात्रा को निर्देशित करता है. राष्ट्र ने पिछले 12 वर्षों में समावेशी विकास पर नए सिरे से बल दिया है. बिरसा मुंडा के सिद्धांत आज भी नए भारत की नीतियों, शासन और आकांक्षाओं को आकार दे रहे हैं.

भगवान बिरसा मुंडा की विरासत देश भर में जनजातीय समुदायों के गीतों, आख्यानों, सामूहिक यादों में लंबे समय से जिंदा है. माननीय प्रधानमंत्री ने 2021 में बिरसा मुंडा के जन्म दिवस 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस घोषित कर उनकी विरासत को राष्ट्रीय मान्यता दी. इस मान्यता को और गहराई देते हुए बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर 15 नवंबर 2024 से 15 नवंबर 2025 तक जनजातीय गौरव वर्ष मनाया गया. इस दौरान जनजातीय गौरव और विरासत के जश्न में समूचे राष्ट्र में 2 लाख से ज्यादा कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनकी पहुंच 3 करोड़ से अधिक नागरिकों तक रही. देश भर में, इन आयोजनों ने जनजातीय जीवन की समृद्धि और विविधता को प्रदर्शित किया.

नागालैंड के हॉर्नबिल महोत्सव और केरल के जनजातीय साहित्यिक महोत्सव से लेकर, झारखंड के राष्ट्रीय जनजातीय फिल्म महोत्सव और तेलंगाना की कैनो स्प्रिंट चैम्पियनशिप (डोंगी चालन प्रतियोगिता) तक, इन कार्यक्रमों ने जनजातीय संस्कृति, रचनात्मकता, खेल और लोककथाओं को राष्ट्रीय पटल पर खड़ा किया. कुल मिलाकर, इनमें अलग-अलग संस्कृतियों और समुदायों का प्रतिनिधित्व करने वाले 11 लाख से अधिक जनजातीय नागरिकों की भागीदारी देखी गई. ये आयोजन इस बात की घोषणा थे कि आधुनिक भारत को आकार देने में जनजातीय विरासत एक जीवंत और सक्रिय शक्ति है. जनजातीय सशक्तिकरण और समावेशन की दिशा में पिछले बारह वर्षों के निरंतर और केंद्रित राष्ट्रीय प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए, जनजातीय गरिमा उत्सव 2026 इस गति को चार विषयगत सप्ताहों के माध्यम से आगे ले जा रहा है, जो मिलकर जनजातीय विकास के संपूर्ण आयाम को दर्शाते हैं. विशेष रूप से इसका तीसरा सप्ताह भारत के भविष्य से जुड़े एक बेहद महत्वपूर्ण प्रश्न पर केंद्रित है- हम उन व्यक्तियों और समुदायों को कैसे पहचानें जिन्होंने इस राष्ट्र को आकार दिया और हम आने वाली पीढ़ी को उस विरासत को आगे बढ़ाने के लिए कैसे सशक्त बनाएं?

इस प्रश्न का उत्तर तलाशने की शुरुआत उन अनेक जनजातीय नायकों को पहचान देने से होती है, जिनका योगदान बहुत लंबे समय तक मुख्यधारा के ऐतिहासिक आख्यानों से गायब रहा. देश के जनजातीय क्षेत्रों में, शिक्षकों, कलाकारों, पारंपरिक चिकित्सकों और समाज सुधारकों की पीढ़ियों ने इन समुदायों को संजो कर रखा है और उनकी सांस्कृतिक पहचान को जीवित रखा है. उनकी कहानियाँ भारत की राष्ट्रीय स्मृति में एक सही और न्यायसंगत स्थान की हकदार हैं और उनके इन योगदानों को दस्तावेजों में दर्ज करने तथा उन्हें याद रखने के निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं. देश भर के जनजातीय अनुसंधान संस्थान (टीआरआई) मौखिक इतिहास का दस्तावेजीकरण करने, स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को रिकॉर्ड करने और जनजातीय भाषाओं व सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करने के प्रयास में एक केंद्रीय भूमिका निभा रहे हैं.

वर्तमान में, 26 राज्यों और 3 केंद्र शासित प्रदेशों के 29 जनजातीय अनुसंधान संस्थान इस कार्य में जुटे हुए हैं, जिसके तहत 222 जनजातीय भाषाओं में 355 का प्रारंभिक दस्तावेजीकरण किया जा चुका है. ये प्रयास भावी पीढ़ियों के लिए अमूल्य सांस्कृतिक ज्ञान को संजोकर रखने में मदद कर रहे हैं. राष्ट्रीय विमर्श में जनजातीय आवाज़ों को फिर से स्थापित करने का प्रयास जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालयों के माध्यम से भी आकार ले रहा है, जिनकी परिकल्पना स्मृति और पहचान के स्थलों के रूप में की गई है. जनजातीय कार्य मंत्रालय ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में जनजातीय समुदायों की भूमिका को सम्मानित करने के लिए 10 राज्यों में ऐसे 11 संग्रहालयों को मंज़ूरी दी है. इनमें से चार संग्रहालयों का उद्घाटन पहले ही किया जा चुका है, जिनमें रांची में भगवान बिरसा मुंडा और नवा रायपुर में शहीद वीर नारायण सिंह को समर्पित संग्रहालय शामिल हैं. इन संस्थानों के जरिए जनजातीय वीरों की गाथाओं के दस्तावेजीकरण और उन पर आधारित कार्यक्रमों के आयोजन से इन्हें भारत की सामूहिक ऐतिहासिक याद में स्थाई रूप से पिरोया जा रहा है.

(लेखिका जनजातीय कार्य मंत्रालय

मध्य क्षेत्र की डायरी

अब मेडिकल, पुलिस सत्यापन व रजिस्ट्रेशन के नाम पर वसूली

दिलीप झा

पूर्व क्षेत्र बिजली कंपनी के ठेकेदारों को नए टेंडर के सेक्शन 5 (18.10) में मेडिकल सर्टिफिकेट, पुलिस सत्यापन व रजिस्ट्रेशन के नाम पर हर ठेका श्रमिक से डेढ़ हजार रुपए वसूलने का बिजली अफसरों ने प्रावधान कर दो करोड़ रु. ठेकेदारों की जेब में जाने को हरी झंडी दे दी है जबकि प्रदेश की 6 बिजली कंपनियों में अभी तक ये राशि आउटसोर्स कर्मियों से वसूलने की मनमानी है. सूत्र बताते हैं कि नए टेंडर में सीपीसीटी का झमेला खड़ा किया गया है. तीन हजार कम्प्यूटर टाइपिस्ट को हटाने का षड्यंत्र किया गया है.

मध्यप्रदेश शासन, सामान्य प्रशासन विभाग के वर्तमान में लागू परिपत्र में सभी विभागों व शासकीय उपक्रमों में केवल नियमित व संविदा वर्ग के लिपिक व कम्प्यूटर टाइपिस्ट के लिए ही सीपीसीटी पास करना जरूरी है, ये नियम आउटसोर्स कर्मियों पर बंधनकारी नहीं है. लेकिन ये पूर्व क्षेत्र बिजली कंपनी के अफसरों ने मनमानी कर नए टेंडर के सेक्शन 4(12) में सीपीसीटी पास करने का पेस जबरन फंसा दिया है. इससे करीब 3 हजार बिजली आउटसोर्स कम्प्यूटर टाइपिस्ट की छंटनी होगी यानी उन्हें नौकरी गंवाना पड़ेगी.

यदि बिजली कंपनी सीपीसीटी का पेंच डालकर उच्च गुणक्ता का काम लेना चाहती है तो श्रम विभाग व मंत्रालय की तर्ज पर कम्प्यूटर टायपिस्ट को मिनिमम वेजेस उच्च कुशल श्रेणी का दें, पर उच्च कुशल की जगह एक पायदान नीचे कुशल श्रेणी का न्यूनतम वेतन थमाना सरासर शोषण है. पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के नए टेंडर में उच्च कुशल श्रेणी हेतु केवल 4 पदों का प्रावधान किया गया है जबकि कुशल श्रेणी के 8521 पद, अर्द्धकुशल के 1468 पद, अकुशल श्रेणी हेतु 4045 पद सहित कुल 14038 पदों का प्रावधान किया है. ये पद विद्युत लाइनों की बढ़ती लंबाई, पावर व वित्तीय ट्रांसफार्मरों की बढ़ती संख्या व बिजली उपभोक्ताओं की बढ़ती तादाद के अनुपात में बहुत कम हैं लेकिन हैरानी की बात है कि बिजली अधिकारियों ने कार्य विस्तार के बावजूद पदों की संख्या बढ़ाने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखलाई है. इस वजह से अधिकारियों की मनमानी से कर्मचारियों में आक्रोश है. पहले बिजली प्रशासन जान-बूझकर ठेकेदारों को भारी लाभ पहुँचाने हेतु नए टेंडर के जरिए मनमाने नियम बनाता है और जब ड्रेस रजिस्ट्रेशन पुलिस सत्यापन -मेडिकल के नाम पर ठेकेदार गरीब आउटसोर्स कर्मियों को लूटता है तो बिजली प्रशासन मूकदर्शक बना रहता है, इसलिए पुराने टेंडर प्रावधान को नए टेंडर में यथावत जस का तस रखना सरकार और कर्मचारियों के हित में है. सूत्र बताते हैं कि नए प्रावधान टेंडर में नहीं लादे जाएं, अन्यथा बिजली आउटसोर्स कर्मी आंदोलन करेंगे. यह अत्यंत हैरानी की बात है कि वादा था आउटसोर्स का वेतन केन्द्र समान दोगुना का, पर कर दिया ठेकेदार का कमीशन दोगुना. विधानसभा चुनाव 2023 में भाजपा ने अपने संकल्प पत्र के बिन्दु 81 में प्रदेश के आउटसोर्स कर्मियों को संविदा कर्मी बनाकर उन्हें केन्द्र समान वेतन देने का जो वादा किया था, उस पर तीन साल बाद भी अमल नहीं हुआ. उल्टे श्रमिकों का शोषण करने वाले मानव बल ठेकेदारों का पारिश्रमिक युद्ध की आर्थिक मंदी के इस दौर में 5 प्रतिशत से बढ़ाकर 10 प्रतिशत करने का फरमान पूर्व क्षेत्र बिजली कम्पनी ने अपने नये टेंडर के बिन्दु 8.1 में जारी कर दिया है, जो आउटसोर्स कर्मियों के साथ सरासर नाइंसाफी है.

इस मामले में मध्यप्रदेश सरकार बिजली आउटसोर्स कर्मचारी संगठन के प्रांतीय संयोजक मनोज भार्गव एवं महामंत्री दिनेश सिसोदिया ने मुख्यमंत्री, वित्त मंत्री व श्रम मंत्री से हस्तक्षेप कर पुराने टेंडर के प्रावधान ज्यों का त्यों रखने की अपील की है. चीफ जनरल मैनेजर (एस एण्ड पी) पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी जबलपुर हेड ऑफिस ने 69 पेज का ई-टेंडर नं. 2026 जारी किया है, उसमें पिछले टेंडर की तुलना में कई बदलाव कर ठेकेदारों को भारी लाभ पहुंचाने का मामला सामना आया है.

युद्ध की आर्थिक मंदी के दौर में भी वित्तीय संयम नहीं

इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया जा रहा कि युद्ध के इस आर्थिक मंदी के दौर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डाक्टर मोहन यादव वित्तीय अनुशासन बरतने के सख्त निर्देश जारी कर रहे हैं, लेकिन दूसरी ओर वित्त विभाग से सहमति लेकर पूर्व क्षेत्र बिजली कंपनी के नए टेंडर के सेक्शन 8.1 में मानव बल ठेकेदारों का कमीशन दोगुना कर 57 करोड़ रूपए का अतिरिक्त वित्तीय भार सरकार पर लादने की तैयारी है, जबकि विरोधाभासपूर्ण विसंगति यह है कि नया टेंडर म.प्र. के वित्त विभाग द्वारा मार्च 2026 में आउटसोर्स सेवा हेतु जारी आरओएएमएस में वर्णित वित्तीय अनुशासन बरतने व एकरूपता रखने संबंधी जारी निर्देशों का भी उल्लंघन है. पिछले टेंडरों में अंतिम पायदान पर खड़े बिजली आउटसोर्स कर्मी के वेतन से ड्रेस या रजिस्ट्रेशन या अन्य नामों से पैसे उगाही पर पूरी तरह मनाही थी. पर नए टेंडर के सेक्शन 5 (18.10) में अब बिजली अधिकारियों ने ठेकेदारों की उगाही का द्वार खोल दिया है.

जबरन मजदूरी के नाम पर टैरिफ!

अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप टैरिफ लगाने के लिए कोई न कोई बहाना खोजते हैं. अब वह जबरन मजदूरी के नाम पर ज्यादती कर रहे हैं. उन्होंने अमेरिकी व्यापार कानून के अनुच्छेद 301 के तहत भारत तथा अन्य 53 देशों पर 12.5 प्रतिशत नया टैरिफ लगाने की तैयारी दर्शाई है. यह कानून उन देशों की अनुचित नीतियों व परंपराओं की जांच के लिए है जिनसे अमेरिका के वाणिज्य-व्यापार को नुकसान पहुंचता है. मिसाल के तौर पर चीन में काफी कम मजदूरी देकर घंटों काम कराया जाता है. इस तरह वह कम लागत में अधिक मैन्युफैक्चरिंग करता है. चीन की बात अलग है लेकिन यूरोपीय यूनियन, कनाडा और भारत की ओर अमेरिका क्यों उंगली उठा रहा है? अमेरिका ने साफ शब्दों में नहीं कहा कि भारत उसे भेजे जाने वाले सामान को तैयार करने के लिए जबरन मजदूरी करा रहा है. अमेरिका की दलील है कि भारत खुद उन देशों से सामान खरीदता है जहां जबरन मजदूरी कराई जाती है. मतलब यह कि भारत चीन से सस्ता सामान आयात करता है. आखिर इसमें अमेरिका को कौन सा नुकसान है? अमेरिका के वाणिज्य प्रतिनिधि जेमिसन ग्रीर का कहना है कि इस तरह के आयात से अमेरिकी श्रमिकों के हित प्रभावित होते हैं. अमेरिका में काम के घंटों के हिसाब से सही वेतन दिया जाता है जिससे वहां उत्पादन लागत बढ़ना स्वाभाविक है. अमेरिका की यह दलील इसलिए मायने नहीं रखती क्योंकि दुर्लभ खनिज, कॉफी, औषधि निर्माण, एयरक्राफ्ट के पुर्जे बनाना जबरन मजदूरी से जुड़े टैरिफ से मुक्त है. अभी भारत पर यह नया 12.5 प्रतिशत टैरिफ लागू नहीं हुआ है. भारत को इस बारे में अमेरिका से बात करनी चाहिए कि यह कदम अवांछित होगा. यह भी संभव है कि भारत से और अधिक व्यापार रियायतें पाने के लिए अमेरिका ने इस टैरिफ धमकी का इस्तेमाल किया होगा. जब अमेरिका और भारत के बीच व्यापार सौदे पर वार्ता जारी है तो इस नए टैरिफ की बात करना व्यर्थ की परेशानी बढ़ाने जैसा है. अमेरिका को ईरान से युद्ध में 100 अरब डॉलर से ज्यादा का नुकसान हुआ है जबकि उसने अतिरिक्त टैरिफ लगाकर 214 अरब डॉलर कमा लिए हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

राम नाम के विस्तृत आयाम राजनीति से फिल्मों तक राम

पड़ोसी ने हमसे कहा, कहा था- 'निशानेबाज, महात्मा गांधी ने 'राम नाम में अमोघ शक्ति है'. आपने प्रत्यक्ष देखा होगा कि राम का सहारा लेकर और धर्म को धंधा बनाकर कोई पार्टी कैसे सत्ता में आ जाती है. रामनाम से जनभावना जुड़ी है.' हमने कहा, 'राजनीति में जगजीवनराम, सीताराम केसरी, रामविलास पासवान, जीतनराम मांझी के नाम कौन नहीं जानता ! हरियाणा में आया राम-गया राम की दलबदल वाली पॉलिटिक्स चर्चित रही है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, फिल्मी दुनिया भी रामभरोसे रहती आई है. आपने गीत सुने होंगे- बोलो सुबह शाम हरे कृष्णा हरे राम!, देखो ऐ दीवानों ऐसा काम ना करो, राम का नाम बदनाम ना करो!, राम करे ऐसा हो जाए, मेरी निंदिया तोहे मिल जाए, मैं जागूं तू सो जाए!, रामजी की निकली सवारी, रामजी की लीला है न्यारी!, मेरे रोम-रोम में बसनेवाले राम, जगत के स्वामी, ओ अंतरयामी, मैं तुझसे क्या मांगू!, राम तेरी गंगा मैली हो गई पापियों के पाप धोते-धोते!, मुझमें राम, तुझमें राम, सब में राम समाया, कर ले सब से प्यार, जगत में कोई नहीं पराया! हीरोइन भी गाती है- चढ़ती जवानी मेरी चाल मस्तानी, तूने कदर ना जानी रामा, हाय रामा!, रामचंद्र कह गए सिया से, ऐसा कलियुग आएगा, हंस चुगेगा दाना-तिनका, कौआ मोती खाएगा! माधुरी दीक्षित पर फिल्माया गया गीत आपको याद होगा- मेरा पिया घर आया ओ रामजी! सामाजिक फिल्मों के दौर में एक गीत था- मैं दुखिया रो-रो हारी, मेरे राम सुनो मेरी विनती ! जब 1 लाख रुपए की बड़ी कीमत थी, तब गाना लिखा गया था- तुम लाखों का हेरफेर करने वाले रामजी, सवा लाख की लॉटरी भेजो अपने भी नाम की!'

हमने कहा, 'पुराने कांग्रेसी नेता पट्टाभि सीतारमैया थे जिन्हें महात्मा गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष पद का उम्मीदवार बनाया था. उन्हें नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने हरा दिया था. तब बापू ने दुखी होकर कहा था कि पट्टाभि की हार मेरी हार है. कर्नाटक में सिद्धारमैया को हटना पड़ा और उनकी जगह शिव कुमार मुख्यमंत्री बन गए.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, फिल्म श्री 420 में गरीबों की बस्ती में राजकपूर ने गाया था- रमैया वस्तावैया, मैंने दिल तुझको दिया ओ रमैया वस्तावैया !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12280 - डॉ. सागर खादीवाला

1		2	3	■	4	5	
	■	6		7			■
■	8		■		■	9	10
11		■	12	■	■	■	
13		14		■	15		
	■	16		17		■	
■	18	■	■	19		20	■
21				■	■	22	

ऊपर से नीचे
1. विधवा 2. खरीदार, ग्रहण करने वाला 3. वह स्थान जहां किसी महंत के अधीन अन्य साधु रह सके 4. लहर, तरंग 5. कष्ट पहुंचाना, तंग करना 7. मजहब, पंथ, संप्रदाय 8. वह बड़ा मंडप जो किसी सभा के अधिवेशन के लिए बनाया या लगाया जाता है 10. रावण 11. मंजिल, लक्ष्य-मार्ग (सं.) 12. कांटेदार 14. अधिकार 15. गुफा 17. मथुरा के राजा उग्रसेन का पुत्र 18. जो बंधा न हो, जो ढका न हो 20. यमुना नदी (सं.)

बाएं से दाएं
1. मुंहजोर, सरकश, दाब न माननेवाला 4. बंजर भूमि जिसमें रेह अधिक होता है 6. अनुचित बात पर अड़े रहने का भाव 8. कीच, कीचड़ 9. शब्द, संगीत 11. भूत-प्रेत की बाधा दूर करने के लिए किसी धागे में मंत्र पढ़कर गांठ लगाने का कार्य 13. पहाड़ के नीचे की भूमि 15. कलाई में पहनने का एक आभूषण 16. एक प्रकार की खोए की मिठाई 19. यात्रियों के ठहरने का स्थान 21. अंडमान-निकोबार द्वीप को इस नाम के संदर्भ से भी जाना जाता है 22. मधुर, स्वादिष्ट, मिठाई

Solution 12279

क्ष	■	प	रि	चि	त	■	आ
म	म	ता	■	■	क	पा	स
ता	ज	■	धू	प	■	रा	व
■	मा	सू	म	■	छां	■	■
■	■	ना	■	पा	व	न	■
पं	जा	■	ता	श	■	क	ल
क	ड़ा	का	■	■	अ	ब	ला
ज	■	ना	ग	य	ज्ञ	■	ट

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में चिन्ताओं से छुटकारा मिलेगा. राज्य, सम्मान की प्राप्ति होगी. गृहकार्यों में व्यस्तता रहेगी. धन लाभ का योग है. मन में प्रसन्नता रहेगी. वर्ष के मध्य में यात्रा का योग है. व्यय में कमी तथा व्यापार में सुधार होगा. रोजगार में सफलता मिलेगी. भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ होगा. वर्ष के अन्त में व्यवहार कुशलता बढेगी. मित्र के कारण कार्यों में व्यवधान आयेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भाईयों से राजनैतिक लाभ होगा. घरेलू कार्यों में व्यस्तता रहेगी. धन लाभ का योग है. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यय में कमी तथा व्यापार में सुधार होगा. रोजगार के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यापार में ऊहापोह की स्थिति निर्मित होगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को सहयोग मिलेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को साहसिक पराक्रम में वृद्धि होगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को निजी दायित्वों की पूर्ति होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, मिलनसार, धार्मिक हष्टपुष्ट, स्वस्थ्य एवं निरोगी होगा. बुद्धि से तीव्र और कुशाग्र होगा. स्वतंत्र विचारधारा का होगा, 24 वर्ष के बाद भाग्योदय होगा. पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

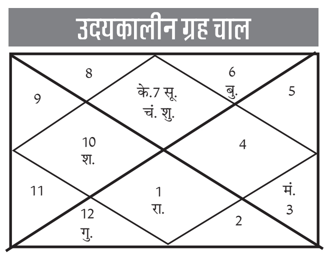

पंचांग

रा.मि. 16 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी शनिवासरे रात 10/7, धनिष्ठा नक्षत्रे रातअंत 4/7, ऐन्द्र योगे दिन 7/27, गर करणे सू.उ. 5/15, सू.अ. 6/45, चन्द्रचार मकर दिन 3/32 से कुम्भ, शु.रा. 10,12,1,4,5,8 अ.रा. 11,2,3,6,7,9 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी को धनिष्ठा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, कपास, वस्त्र, खली, बिनौला, सफेद रंग की वस्तुओं की तेजी होगी, बादाम, मीन, छुहारा, इमली, के भाव में नरमी के साथ तेजी होगी, आज पिछले दिन के भाव रहेंगे. भाग्यांक 8352 है.

मेष- आपके प्रयासों से सबकुछ अनुकूल रहेगा, जमीन जायजाद कोर्ट कचहरी आदि के कार्यों में अवरोध दूर होगा, अनावश्यक विवाद को टालना हितकर रहेगा.

वृषभ- यात्रा योग टालना लाभकारी है, खानपान की गड़बड़ी से स्वास्थ्य शिथिल रहेगा, मान सम्मान में वृद्धि होगी. पुराना पैसा प्राप्त होने से खुशी होगीं.

मिथुन- आज कारीबारी यात्रा लाभदायक रहेगी, धन वसूलने में सफलता मिलेगी, शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी, मनोविनोदपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी.

कर्क- महत्वपूर्ण कार्य आसानी से बन सकते हैं, धर्म कर्म और आध्यात्मक में मन लगेगा, दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी, राजकीय क्षेत्र में सफलता मिलेगी.

सिंह- कार्यो की अधिकता से मन खिन्न रहेगा, नये लोगों से मेलजोल बढ़ेगा, अचानक धन लाभ प्राप्त होगा, नवीन योजना बनेगी. नियमितता का ध्यान रखें.

कन्या- विवादग्रस्त मामले सामने आयेंगे, जिनका समाधान समझदारी से होगा, नियोजित कार्य सफल होगा, मानसिक प्रसन्नता होगी.

तुला- व्यवसाय के प्रति सचेत रहकर कार्य करें, भाई या मित्र के कारण संबंधों में तनाव आ सकता है, पारिवारिक सुख मिलेगा, हर्ष बना रहेगा.

वृश्चिक- अधिनस्थों की मदद से महत्वपूर्ण कार्य बनेगा, किसी धार्मिक अनुष्ठान करने का मन बनेगा, लंबी यात्रा हेतु तैयार रहें, आर्थिक मामलों में सावधानी रखें.

धनु- विरोधी पक्ष सक्रिय रहेगा, स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही ठीक नहीं होगी, ऐसी कोई घटना घट सकती है, जो आपके लिये हितकारी रहेगी, यश प्राप्त होगा.

मकर- बनते कार्य बिगड़ सकते हैं, परिस्थितियों का सामना करने में कामयाबी मिलेगी, रिश्तेदारी को लेकर विवाद हो सकता है, संयम से काम लेना उचित होगा.

कुम्भ- व्यवसाय में नवीन साझेदारी प्रस्ताव सामने आयेंगे, धन लाभ होगा,संतान की चिन्ता रह सकती है, पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

मीन- माता को कष्ट हो सकता है, संतान के कार्यों में विशेष खर्च होगा, पारिवारिक जबावदारी रहेगी, मान सम्मान में वृद्धि होगी. मानसिक संतोष रहेगा.

SUDOKU 7412

	4		7		1			3
3		5		4		1		
	2				8			
4		3						
	8			2			1	
						8		6
			2				3	
		9		8		2		4
1			4		6		9	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-दोकु 7411

9	2	7	4	8	6	5	3	1
5	1	6	3	2	9	4	8	7
3	4	8	7	1	5	9	6	2
8	3	4	9	5	1	2	7	6
7	6	5	8	4	2	3	1	9
1	9	2	6	3	7	8	5	4
6	7	3	2	9	8	1	4	5
2	8	1	5	7	4	6	9	3
4	5	9	1	6	3	7	2	8